

वृत्तपत्राचे नांव :- हिन्दी मित्र
 वृत्तपत्र प्रकाशन ठिकाण :- हैदराबाद
 वृत्तपत्र पान नं. :- ७.....
 दिनांक :- ३१ - ०१ - २००७...
 कटिंग नंबर:

भावातीत ध्यान के नियमित अभ्यास से आत्मचेतना पराचेतना के रूप में विकसित, विस्तारित होती है और स्थायित्व ग्रहण करती है। ऋग्वेद सहित समग्र वैदिक वांगमय इसी पराचेतना की पराकाष्ठा ब्राह्मी चेतना का स्पन्दन है। ब्राह्मी चेतना के स्पन्दन में ही प्रकृति के वे असंख्य नियम विद्यमान हैं, जो अनन्त काल से समस्त सृष्टि का सृजन, पालन और विकास करते आ रहे हैं। जब ध्यान के समय मानवीय चेतना अपनी मौलिकता और शान्तता में गहरे उतरती चली जाती है, उससे लौकिक जीवन के क्षेत्र, वह चाहे वैयक्तिक हो या सामाजिक, अपने आप पुष्ट होते जाते हैं। ऋग्वेद के एक सूक्त के विनियोग में यह जो 'दीर्घतमा' ऋषि का उल्लेख हुआ है, वे उस चेतना का स्तर हैं, जिसका बोध भावातीत ध्यान से शान्ति की बढ़ती लंबी सुरंग के रूप में होता है। शान्ति की यह दीर्घ या लंबी सुरंग

मानवीय चेतना के पराचेतना में जागने से सारे कार्यों में सफलता

- महर्षि महेश योगी

अन्ततोगत्वा ब्राह्मी प्रकाश में खुलती है, यह देवताओं (भगवान् शिव, विष्णु, सूर्य, गणपति ऋग्वेद के प्रथम ऋषि 'मधुच्छन्दा' की चेतना और माँ दुर्गा) की सत्ता का समन्वित क्षेत्र है। यह चेतना की शान्ति का वह गहन स्तर है, मनुष्य ईश्वर की प्रतिमूर्ति है। ईश्वर ने स्वयं को जो सृष्टि का संचालन करने वाले पाँच प्रथम मनुष्य के रूप में व्यक्त किया है, इसलिए उसका

देवत्व उसकी चेतना के मूल स्वभाव में है। इन पाँच देवताओं के अलावा हजारों देवता हैं और ये सब ब्राह्मी सत्ता के क्रियाक्षेत्र के प्रकृति के

जीवन की मूल चेतना की शांति और क्षमता की सामन्वित अवस्था का नाम ही ब्रह्म है। तब ही तो ब्रह्मन्वृत्त कहते हैं- ब्रह्म सत्ता में सामन्वित चित्तबोधाभावों एवं विविधताओं का एकत्व है, सामन्वय है- तत्त्वसामन्वयात्। सतोगुणी भोजन और वास्तु अनुवादी परिवार में भावातीत ध्यान और यौगिक पलाङ्गन सहित अथ्य विद्विन्वृत्तों के अभ्यास से मानवीय चेतना जब अपनी मौलिकता में जाग जाती है, तब व्यक्ति का मन, बुद्धि, अहंकार, इन्द्रियाँ और उनका व्यवहार सबके सब ब्राह्मी सत्ता से संचालित होने लगते हैं। फिर बही होता है, जो व्यक्ति ब्राह्मी सत्ता से संचालित होने लगते हैं।



नियमों के अधिकारी है। जब मानवीय चेतना अपनी आत्मसत्ता में जाग जाती है, ब्रह्म हो जाती है, 'अयं आत्मा ब्रह्म' को चरितार्थ करती है, तब प्रकृति के नियमों के स्वामी देवता मानवीय संकल्पों को स्वयं पूरा करने लग जाते हैं। जब ऐसा होता है, तब हर कार्य में सफलता मिलती

है, जीवन तृप्त रहता है और तृप्ति ही में आनन्द है।

जब युग की, देश की सामूहिक चेतना सतोगुणी होती है, तब मानवीय चेतना का दैवी होना अल्प समय में ही सम्भव और सरल हो जाता है। जीवन की मूल चेतना की शान्ति और क्रिया की समन्वित अवस्था का नाम ही ब्रह्म है। तब ही तो ब्रह्मसूत्र कहते हैं- इस सत्ता में समस्त विरोधाभासों एवं विविधताओं का एकत्व है, सामन्वय है- तत्त्वसामन्वयात्। सतोगुणी भोजन और वास्तु अनुसारी परिसर में भावातीत ध्यान और यौगिक पलाङ्गन सहित अन्य सिद्धिपूर्वक अभ्यास से मानवीय चेतना जब अपनी मौलिकता में जाग जाती है, तब व्यक्ति का मन, बुद्धि, अहंकार, इन्द्रियाँ और उनका व्यवहार सबके सब ब्राह्मी सत्ता से संचालित होने लगते हैं। फिर बही होता है, जो व्यक्ति और समाधि के हित में होता है।